

2382

श्री गणेशाय नमः

१॥ दाही रे नारी मरु का बले कुल
को दोस

२॥ काजा नारी मरु का बले वायु के
दोस भंनु

३॥ कुल का नारी बले डाही नी वो क
सी लागे वंनु

४॥ लपटे नारी बले वो क सी

लेहा रे को भंनु

५॥ समुद्र दुपदा रे नारी धुमे धागा
र का गुगा भंनु

६॥ कुवाला पादा दुपदा रे नारी घेले
अवसे मर्द भंनु

७॥ दाही रे मधुरा वाभा मरु का पक टंका
रसा बले कीर को दोस भंनु

८॥ डूवे गारी मधुरा बले लखी बाल भंनु

९॥ डूवे गारी वी जुली बम् के जसो बले

पुत्र लागा डेको भंनु

१०॥ काक का पडुल्लो गारी बले गागालो को

भंनु

११॥ प्रोगडु बालको गारी बले गामरी

भागु भुनु

१२॥ दा हीने कामा बले मसा लको दोस

१३॥ मोहोरा बालको गारी बले धंम् की

रगमरी होला

१४॥ वीसा मधुरा बले रुगायो की भंनु

१५॥ सहस्त्र गारी बले संसाती भंनु

१६॥ यं बरासि बले यं बकं ने देवी भंनु

१७॥ वीसा गारी आल जलको दोस भंनु

१८॥ मधुरा गारी ताता ६५ को आप गरम्

रोख होला

महुँ उल्टो मंदी बलें गाये गो गो का पुगोला
की गाथंनु

२७॥ उल्टो सुल्टो बलें दारो की गाथंनु

२८॥ धं धं धं धं देवीको भावल की म

२९॥ सोहै मरी मरी गली गली का धु देव

कु फात को

३०॥ बरु का दवी ने गरी गाग उठा दके

धंनु

३१॥ काही ने गरी वामा वामा गरी दाही ने

हा नो भने जल मसा नरु धा नाग धंनु

३२॥ ते री ते दे गरी दवी धु भने वो कुली

का दोडा धंनु

३३॥ काही न बरु का रम धुरा वामा पक

नास बरु का बले भा गरी देवी धंनु

२१॥ अजी गरी बले सुजे को दो सभंनु

२८॥ गरी साजे ग अलय भ प्रभंने

मु कु टा को दो सभंनु

२९॥ जोर जे गरी बले दाही नीले धेत को

नाग उठा पको रात मा पुजा गरी

३०॥ ताता बर का बले वीधं जोग भंनु

३१॥ सीसा बर का बले सी तांग जो भंनु

३२॥ कैले धीसा कैले ताता बले भी बग सी वा

सीर स दं भंनु

३३॥ कैले उधो कैले उधो बले तुलु का

वा पु भंनु

३४॥ लावी कु गरी लां म मे बले दे उता का

वा न लागे दं भंनु

३५॥ सा गो गरी बर का बले सी भु को दे उता भंनु

३६॥ जोटा गरी प्र धुता बले पे सु रा वा पु भंनु

अं सी रा भु दे व उर्व ता पा उरा भु का उ

जगा उहात ली उमहे ला अ दे ता

अंगी नीउका नी देदीनी भेदी नी
उरि ईस्वर माहादेव गोरवाचता
की वावा ॥ वामन इत्येरागर्भ
जानी सीमा लार्ह नारी लोउ
लोखाना लेखायनी जपन

श्री गुरुदेव
AS-10-27-10-10-10

2382